

Summary of May 30 & June 27 Sessions

Raising our Children for Academic Excellence:

Raising a good Human Being



بچوں میں علمی ترقی اور تعمیرِ انسانیت

شہباز رشید بہورو

کشمیر کیئر فاؤنڈیشن کی علمی نشستیں

تعلیم کا مقصد محض اچھے امتحانی نتائج یا اعلیٰ پیشہ ورانہ کامیابیوں تک محدود نہیں بلکہ ایسے انسانوں کی تعمیر ہے جو علم کے ساتھ اعلیٰ کردار، انسان دوستی، ذمہ داری اور ثابت قدمی جیسی صفات سے بھی آراستہ ہوں۔ اسی فکر کو فروغ دینے کے لیے کشمیر کیئر فاؤنڈیشن (KCF) نے 30 مئی اور 27 جون کو "بچوں میں علمی ترقی اور تعمیرِ انسانیت" کے موضوع پر دو اہم علمی نشستوں کا انعقاد کیا، جن میں والدین، اساتذہ، طلبہ اور اسکالرز نے شرکت کی۔

ان نشستوں کی بنیاد KCF کے اس منفرد تصور "مشفقانہ تربیتی ماحول" پر تھی، جس کے مطابق بچے کی حقیقی نشوونما خاندان، اسکول، سرپرست اور معاشرے کے باہمی تعاون اور مثبت تعامل سے ممکن ہوتی ہے۔ اسی مقصد کے تحت مختلف طبقات کو ایک مشترکہ مکالمے میں شریک کیا گیا تاکہ ان کے تجربات، مشاہدات اور آراء سے رہنمائی حاصل کی جاسکے۔

گفتگو کا آغاز اس بنیادی نکتے سے ہوا کہ تعلیمی اداروں کی کامیابی صرف اعلیٰ تعلیمی نتائج سے نہیں ناپی جا سکتی بلکہ ایسے اولوالعزم اور باحوصلہ نوجوان تیار کرنا ان کی اصل ذمہ داری ہے جو زندگی کے نشیب و فراز کا اعتماد اور ثابت قدمی کے ساتھ سامنا کر سکیں۔ اس کے ساتھ یہ حقیقت بھی سامنے آئی کہ والدین کی حد سے زیادہ فکر مندی اور غیر محسوس توقعات اکثر بچوں پر نفسیاتی دباؤ کا باعث بن جاتی ہیں۔

شرکاء نے اس بات پر زور دیا کہ بچوں کی تعلیم و تربیت صرف اسکول یا اساتذہ کی ذمہ داری نہیں بلکہ والدین کو بھی اپنی ذمہ داری پوری دیانت داری اور سرگرمی کے ساتھ ادا کرنی چاہیے۔ والدین اگر خود کو اس عمل سے الگ کر کے محض خاموش تماشا بن جائیں تو تربیت کا عمل ادھورا رہ جاتا ہے۔

آج کے بچے یک وقت کئی طرح کے دباؤ کا سامنا کر رہے ہیں۔ تعلیمی بوجھ، سماجی موازنہ، غیر نصابی سرگرمیوں میں کامیابی کی دوڑ اور معاشرتی معیار ان کی شخصیت پر گہرے اثرات مرتب کرتے ہیں، جس کے نتیجے میں ان کی تخلیقی صلاحیت اور انفرادیت متاثر ہوتی ہے۔ اسی لیے نشستوں میں اس بات پر زور دیا گیا کہ والدین بچوں کو صرف ڈاکٹریا انجینئر بنانے کی سوچ تک محدود نہ رکھیں بلکہ انہیں کامیابی کے متنوع مواقع سے روشناس کرائیں۔ اسی طرح بچوں کا دوسروں سے موازنہ کرنے کے رجحان کی حوصلہ شکنی کرتے ہوئے کہا گیا کہ والدین کی اولین ترجیح بچوں کی کردار سازی ہونی چاہیے، نہ کہ صرف زیادہ نمبر حاصل کرنا۔

مشفقانہ تربیتی ماحول کی عملی مثال گھروں میں آبا و اجداد اور اسلاف کی کہانیوں میں موجود ہے۔ والدین اگر روزانہ چند منٹ بچوں کے ساتھ چہل قدمی کریں، خوشگوار گفتگو کریں اور ہنسی مذاق میں وقت گزاریں تو باہمی اعتماد مضبوط ہوتا ہے اور نسلوں کے درمیان فاصلے کم ہوتے ہیں۔

صحت اور منشیات سے تحفظ کے موضوع پر نشستوں میں اس امر پر خصوصی توجہ دی گئی کہ والدین کی خاموشی بچوں کے لیے نقصان دہ ثابت ہو سکتی ہے۔ بچوں سے کھل کر گفتگو کرنا، انہیں درست معلومات فراہم کرنا اور خود بھی اس حوالے سے مؤثر طریقہ کار سے آگاہ رہنا وقت کی اہم ضرورت ہے۔ اسی طرح والدین اور اساتذہ کو بچوں میں گمراہی کی ابتدائی علامات پہچاننے کی صلاحیت بھی پیدا کرنی چاہیے تاکہ بروقت رہنمائی ممکن ہو سکے۔

نشستوں میں فطرت کو بھی تعلیم کا ایک اہم ذریعہ قرار دیا گیا۔ "ہماری یونیورسٹی" کے تصور کے مطابق فطرت سے قربت، اس کے مشاہدے اور ماہرین کے تجربات سے استفادہ بچوں کی ہمہ جہت تعلیمی ترقی، حساسیت، ذمہ داری اور فطرت سے ہم آہنگی پیدا کرنے میں اہم کردار ادا کرتا ہے۔

حقیقی کامیابی کے تصور پر گفتگو کرتے ہوئے شرکاء نے اس بات پر اتفاق کیا کہ ایک طالب علم کی تعلیمی اور پیشہ ورانہ کامیابی اسی وقت بامعنی ہوتی ہے جب وہ انسانیت، رحم دلی، صبر اور اعلیٰ اخلاقی اقدار سے جڑی ہو۔ اسی لیے جذباتی ذہانت، جس میں ہمدردی، نظم و ضبط، ثابت قدمی اور دیانت داری شامل ہیں، کو محض ذہانت (IQ) سے زیادہ اہم قرار دیا گیا۔ کامیابی کا اصل حسن عاجزی، خدمتِ خلق اور انکساری میں ہے، نہ کہ غرور اور تفاخر میں۔

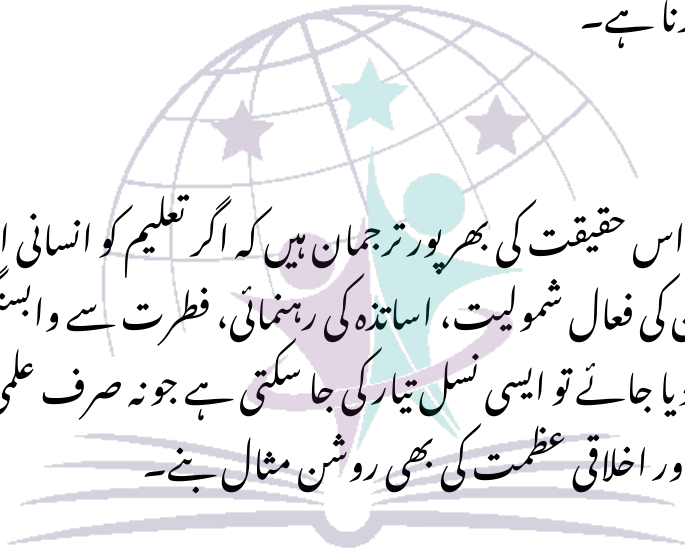
اس کے ساتھ یہ بھی واضح کیا گیا کہ خارجی تربیت کے ساتھ داخلی تحریک، دلچسپی اور سچی خواہش بھی کامیابی کے لیے ناگزیر ہیں۔ جذباتی توازن، خود احتسابی اور نظم و ضبط انسان کو بے جا گھر سے لگاؤ (Homesickness)، مشکلات اور غیر یقینی حالات کا سامنا کرنے کے قابل بناتے ہیں، جبکہ ثابت قدمی ہر مشکل میں آگے بڑھنے کا حوصلہ عطا کرتی ہے۔ اسی طرح استاد اور والدین کی موثر رہنمائی (Mentorship) بچوں میں دورانِ نشی، عقلمندی اور اعتماد پیدا کرتی ہے۔

ڈیجیٹل لت کے بڑھتے ہوئے رجحان پر بھی تشویش کا اظہار کیا گیا اور اس بات پر زور دیا گیا کہ اس سے بچاؤ کا آغاز گھر سے ہونا چاہیے، کیونکہ بچے سب سے پہلے اپنے والدین اور بزرگوں کے طرزِ عمل سے سیکھتے ہیں۔ اسی طرح شکرگزاری، تدبر اور تفکر جیسی صفات بھی صرف نصیحت سے نہیں بلکہ عملی نمونے سے پیدا ہوتی ہیں۔

نشیات کے حوالے سے یہ اہم نکتہ بھی سامنے آیا کہ اس کی لت کو محض اخلاقی کمزوری یا برتاؤ کا مسئلہ نہ سمجھا جائے بلکہ ایک باقاعدہ طبی عارضہ تصور کرتے ہوئے اس کا مناسب علاج کیا جائے۔

نشستوں کا اختتام اس جامع پیغام پر ہوا کہ ناکامی زندگی کا اختتام نہیں بلکہ نئے عزم، بہتر حکمتِ عملی اور موثر رہنمائی کے ساتھ دوبارہ اٹھ کھڑے ہونے کا موقع ہے۔ کامیابی کا کوئی مختصر راستہ نہیں ہوتا؛ یکسوئی، محنت، لگن اور مسلسل خود احتسابی ہی ترقی کی بنیاد ہیں۔ اسی طرح طالب علمی کو ایک کل وقتی ذمہ داری سمجھنا چاہیے، جس کا مقصد علم کو مسلسل اور مرحلہ وار حاصل کرتے ہوئے تعلیم کی مختلف منازل طے کرنا ہے۔

یہ دونوں علمی نشستیں اس حقیقت کی بھرپور ترجمان ہیں کہ اگر تعلیم کو انسانی اقدار، کردار سازی، جذباتی ذہانت، والدین کی فعال شمولیت، اساتذہ کی رہنمائی، فطرت سے وابستگی اور مشفقانہ تربیتی ماحول کے ساتھ جوڑ دیا جائے تو ایسی نسل تیار کی جاسکتی ہے جو نہ صرف علمی اعتبار سے ممتاز ہو بلکہ انسانیت کی خدمت اور اخلاقی عظمت کی بھی روشن مثال بنے۔



बच्चों का शैक्षणिक और मानवीय विकास

शाहबाज़ रशीद बहुरो

कश्मीर केयर फ़ाउंडेशन शैक्षणिक सत्र

शिक्षा का मकसद सिर्फ़ अच्छे परीक्षा परिणाम या बड़ी पेशेवर उपलब्धियाँ हासिल करना नहीं

है, बल्कि ऐसे इंसान तैयार करना है जिनमें ज्ञान के साथ-साथ ऊँचा चरित्र, परोपकार,

ज़िम्मेदारी और दृढ़ता जैसे गुण हों। इसी सोच को बढ़ावा देने के लिए, कश्मीर केयर फ़ाउंडेशन

(KCF) ने 30 मई और 27 जून को "बच्चों का शैक्षणिक और मानवीय विकास" विषय पर दो

महत्वपूर्ण शैक्षणिक सत्र आयोजित किए, जिनमें माता-पिता, शिक्षकों, छात्रों और विद्वानों ने

भाग लिया।

ये सत्र KCF की "सहानुभूतिपूर्ण सीखने का माहौल" (compassionate learning

environment) वाली अनूठी अवधारणा पर आधारित थे, जिसके अनुसार बच्चे का

वास्तविक विकास परिवार, स्कूल, अभिभावक और समाज के बीच आपसी सहयोग और

सकारात्मक बातचीत से ही संभव है। इस उद्देश्य के तहत, अलग-अलग वर्गों को एक साझा

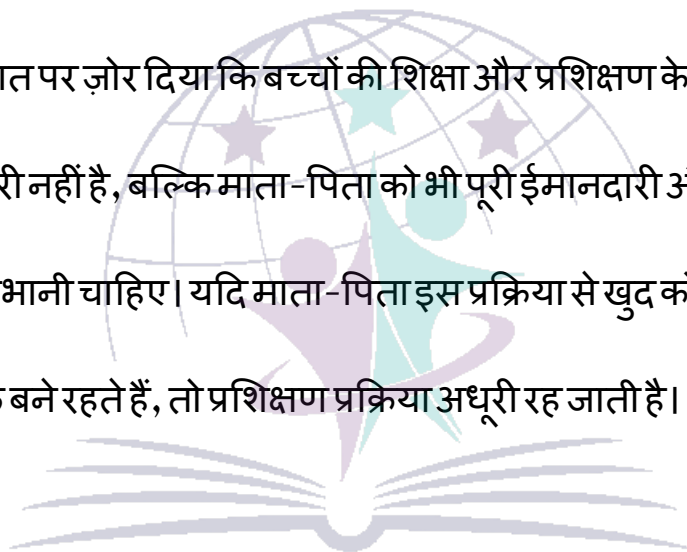
बातचीत में शामिल किया गया ताकि उन्हें उनके अनुभवों, अवलोकनों और विचारों से

मार्गदर्शन मिल सके।



चर्चा इस बुनियादी बात से शुरू हुई कि शैक्षणिक संस्थानों की सफलता को केवल उच्च शैक्षणिक परिणामों से नहीं मापा जा सकता, बल्कि उनकी असली ज़िम्मेदारी ऐसे दृढ़ और साहसी युवाओं को तैयार करना है जो आत्मविश्वास और अडिगता के साथ जीवन के उतार-चढ़ाव का सामना कर सकें। साथ ही, यह बात भी सामने आई कि माता-पिता की अत्यधिक चिंता और अवास्तविक उम्मीदें अक्सर बच्चों पर मानसिक दबाव का कारण बनती हैं।

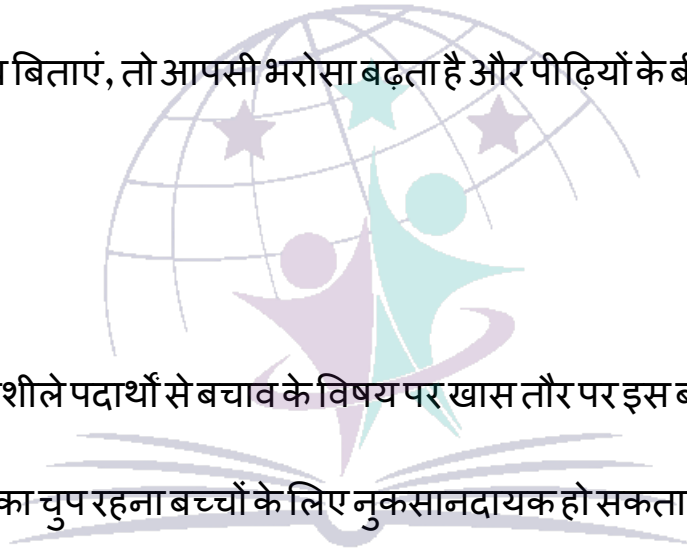
प्रतिभागियों ने इस बात पर ज़ोर दिया कि बच्चों की शिक्षा और प्रशिक्षण केवल स्कूल या शिक्षकों की ज़िम्मेदारी नहीं है, बल्कि माता-पिता को भी पूरी ईमानदारी और सक्रियता के साथ अपनी ज़िम्मेदारी निभानी चाहिए। यदि माता-पिता इस प्रक्रिया से खुद को अलग कर लेते हैं और केवल मूक दर्शक बने रहते हैं, तो प्रशिक्षण प्रक्रिया अधूरी रह जाती है।



आज के बच्चे एक साथ कई तरह के दबावों का सामना कर रहे हैं। शैक्षणिक बोझ, सामाजिक तुलना, पाठ्येतर गतिविधियों में सफलता की दौड़ और सामाजिक मानक उनके व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव डालते हैं, जिससे उनकी रचनात्मकता और व्यक्तित्व की विशिष्टता प्रभावित होती है। इसलिए, सत्रों में इस बात पर ज़ोर दिया गया कि माता-पिता को अपने बच्चों को केवल

डॉक्टर या इंजीनियर बनने के विचार तक सीमित नहीं रखना चाहिए, बल्कि उन्हें सफलता के विविध अवसरों से परिचित कराना चाहिए। इसी तरह, बच्चों की दूसरों से तुलना करने की प्रवृत्ति को हतोत्साहित करते हुए यह कहा गया कि माता-पिता की पहली प्राथमिकता बच्चों का चरित्र निर्माण होनी चाहिए, न कि केवल अच्छे अंक प्राप्त करना।

सहानुभूतिपूर्ण प्रशिक्षण माहौल के व्यावहारिक उदाहरण घरों में पूर्वजों की कहानियों में मिलते हैं। अगर माता-पिता हर दिन कुछ मिनट बच्चों के साथ टहलें, अच्छी बातें करें और हंसी-मज़ाक में समय बिताएं, तो आपसी भरोसा बढ़ता है और पीढ़ियों के बीच की दूरी कम होती है।



सेशन में सेहत और नशीले पदार्थों से बचाव के विषय पर खास तौर पर इस बात पर ज़ोर दिया गया कि माता-पिता का चुप रहना बच्चों के लिए नुकसानदायक हो सकता है। बच्चों से खुलकर बात करना, उन्हें सही जानकारी देना और इस बारे में असरदार तरीकों की जानकारी रखना आज की ज़रूरत है। इसी तरह, माता-पिता और शिक्षकों को बच्चों में गलत रास्ते पर जाने के शुरुआती संकेतों को पहचानने की क्षमता भी विकसित करनी चाहिए ताकि समय रहते सही मार्गदर्शन मिल सके।

सेशन में प्रकृति को भी शिक्षा का एक अहम ज़रिया बताया गया। "हमारी यूनिवर्सिटी" की सोच के अनुसार, प्रकृति के करीब रहना, उसे देखना-समझना और विशेषज्ञों के अनुभवों से लाभ उठाना बच्चों के सर्वांगीण शैक्षिक विकास, संवेदनशीलता, ज़िम्मेदारी और प्रकृति के साथ तालमेल बिठाने में अहम भूमिका निभाता है।

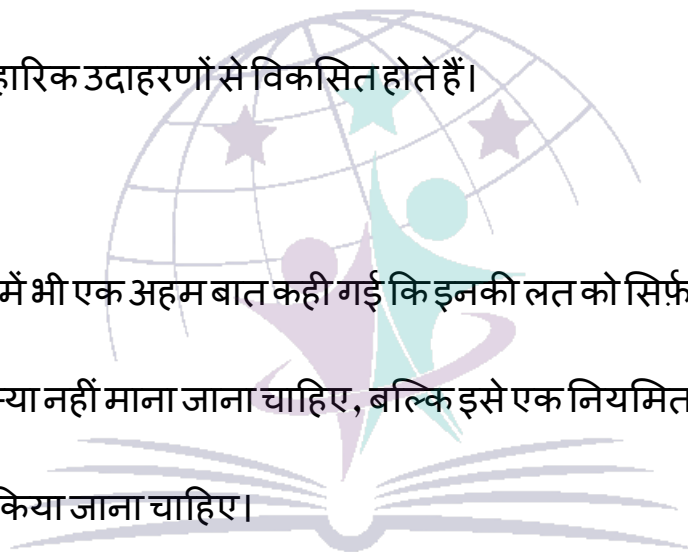
असली सफलता की सोच पर चर्चा करते हुए, सभी इस बात पर सहमत हुए कि किसी छात्र की शैक्षणिक और पेशेवर सफलता तभी सार्थक होती है जब वह इंसानियत, दयालुता, धैर्य और उच्च नैतिक मूल्यों से जुड़ी हो। इसीलिए, सिर्फ बुद्धिमत्ता (IQ) से ज़्यादा ज़रूरी 'इमोशनल इंटेलिजेंस' (भावनात्मक समझ) को बताया गया, जिसमें सहानुभूति, अनुशासन, दृढ़ता और ईमानदारी शामिल हैं। सफलता की असली खूबसूरती विनम्रता, इंसानियत की सेवा और सादगी में है, न कि घमंड और डींगें मारने में।

यह भी साफ़ किया गया कि बाहरी ट्रेनिंग के साथ-साथ सफलता के लिए अंदरूनी प्रेरणा, रुचि और सच्ची इच्छा भी बहुत ज़रूरी है। भावनात्मक संतुलन, अपनी ज़िम्मेदारी खुद लेना और अनुशासन व्यक्ति को घर की याद सताने, मुश्किलों और अनिश्चितताओं का सामना करने में

मदद करते हैं, जबकि दृढ़ता हर मुश्किल में आगे बढ़ने का साहस देती है। इसी तरह, शिक्षकों और माता-पिता से मिलने वाली असरदार मेंटरशिप बच्चों में दूरदर्शिता, समझदारी और आत्मविश्वास पैदा करती है।

डिजिटल लत के बढ़ते चलन पर भी चिंता जताई गई और इस बात पर ज़ोर दिया गया कि बचाव की शुरुआत घर से होनी चाहिए, क्योंकि बच्चे सबसे पहले अपने माता-पिता और बड़ों के व्यवहार से ही सीखते हैं। इसी तरह, कृतज्ञता, समझदारी और चिंतन जैसे गुण भी सिर्फ सलाह से नहीं, बल्कि व्यावहारिक उदाहरणों से विकसित होते हैं।

नशीले पदार्थों के बारे में भी एक अहम बात कही गई कि इनकी लत को सिर्फ नैतिक कमजोरी या व्यवहार संबंधी समस्या नहीं माना जाना चाहिए, बल्कि इसे एक नियमित मेडिकल समस्या मानकर सही इलाज किया जाना चाहिए।



सेशन का समापन इस व्यापक संदेश के साथ हुआ कि असफलता जीवन का अंत नहीं है, बल्कि नए संकल्प, बेहतर रणनीति और असरदार मार्गदर्शन के साथ फिर से उठने का एक मौका है। सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता; लगन, कड़ी मेहनत, समर्पण और लगातार खुद के प्रति

जवाबदेही ही तरक्की की नींव हैं। इसी तरह, विद्यार्थी जीवन को एक फुल-टाइम जिम्मेदारी माना जाना चाहिए, जिसका मकसद लगातार और कदम-दर-कदम ज्ञान हासिल करके शिक्षा के अलग-अलग पड़ावों को पाना है।

ये दो एकेडमिक सेशन इस बात का ज़बरदस्त उदाहरण हैं कि अगर शिक्षा को मानवीय मूल्यों, चरित्र निर्माण, इमोशनल इंटेलिजेंस, माता-पिता की सक्रिय भागीदारी, टीचर के मार्गदर्शन, प्रकृति से जुड़ाव और संवेदनशील ट्रेनिंग माहौल के साथ जोड़ा जाए, तो ऐसी पीढ़ी तैयार की जा सकती है जो न सिर्फ पढ़ाई-लिखाई में बेहतरीन हो, बल्कि मानवता की सेवा भी करे।



Academic Development and Human Development in Children

Shahbaz Rashid Bahuro

Kashmir Care Foundation Academic Sessions

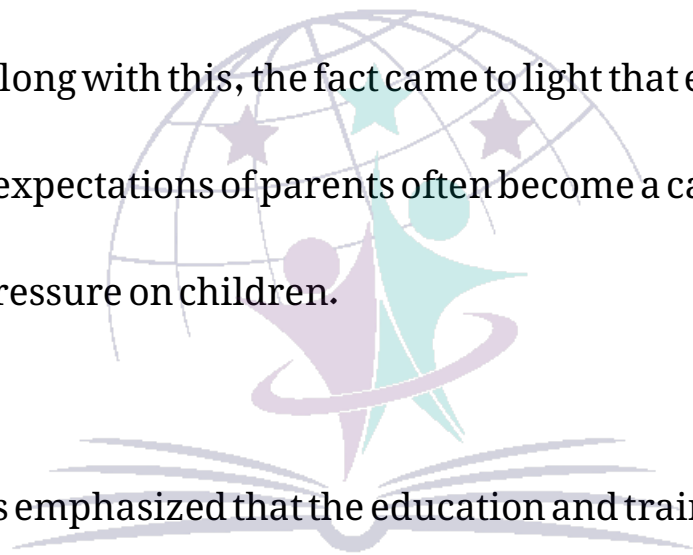
The aim of education is not limited to good examination results or high professional achievements but to build such human beings who are endowed with qualities like high character, philanthropy, responsibility and perseverance along with knowledge. To promote this thought, Kashmir Care Foundation (KCF) organized two important academic sessions on the topic of “Academic Development and Human Development in Children” on May 30 and June 27, in which parents, teachers, students and scholars participated.



These sessions were based on KCF’s unique concept of “compassionate learning environment”, according to which the true development of a child is possible through mutual cooperation and positive interaction between family, school, guardian and society. Under this objective,

different segments were involved in a common dialogue so that they could be guided by their experiences, observations and opinions.

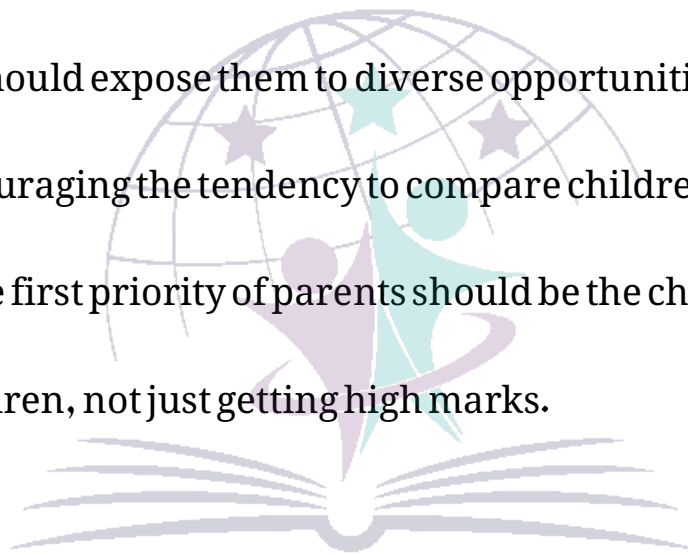
The discussion began with the basic point that the success of educational institutions cannot be measured only by high academic results, but it is their real responsibility to prepare such determined and courageous youth who can face the ups and downs of life with confidence and steadfastness. Along with this, the fact came to light that excessive worry and unrealistic expectations of parents often become a cause of psychological pressure on children.



The participants emphasized that the education and training of children is not only the responsibility of the school or teachers, but parents should also fulfill their responsibility with full honesty and activity. If parents detach themselves from this process and become mere silent spectators, the training process remains incomplete.

Today's children are facing many types of pressure simultaneously.

Academic burden, social comparison, the race for success in extracurricular activities and social standards have a profound impact on their personality, which in turn affects their creativity and individuality. Therefore, it was emphasized in the sessions that parents should not limit their children to the idea of becoming doctors or engineers but should expose them to diverse opportunities for success. Similarly, discouraging the tendency to compare children with others, it was said that the first priority of parents should be the character building of children, not just getting high marks.

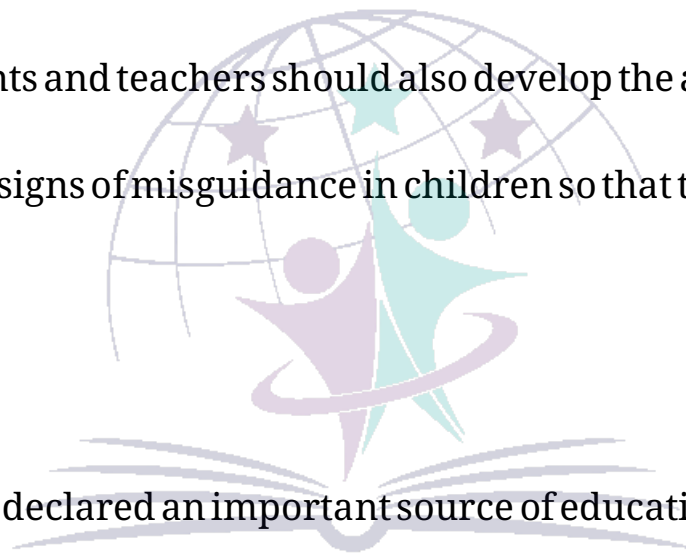


Practical examples of a compassionate training environment are found in the stories of ancestors and ancestors in homes. If parents walk with children for a few minutes every day, have pleasant conversations and

spend time in laughter, mutual trust is strengthened and the gaps between generations are reduced.

Special attention was paid in the sessions on the topic of health and drug protection that parental silence can prove harmful to children. Talking openly with children, providing them with correct information and being aware of effective methods in this regard is the need of the hour.

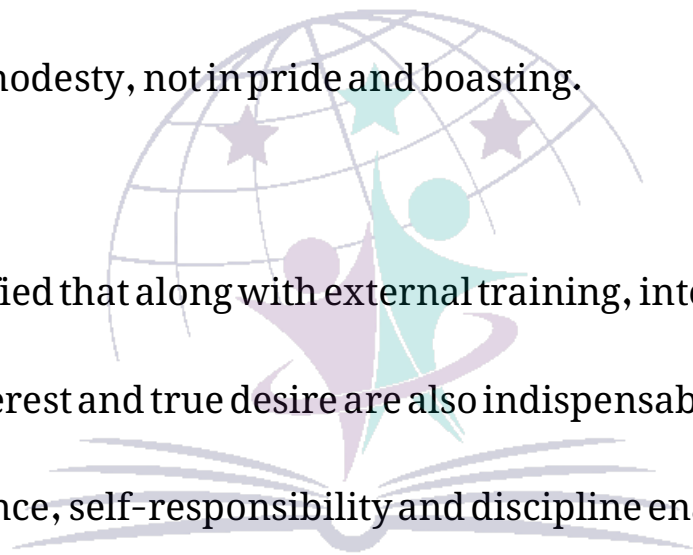
Similarly, parents and teachers should also develop the ability to recognize early signs of misguidance in children so that timely guidance can be possible.



Nature was also declared an important source of education in the sessions. According to the concept of "Our University", closeness to nature, its observation and benefit from the experiences of experts play an important role in the all-round educational development of children, sensitivity, responsibility and harmony with nature.

Discussing the concept of real success, the participants agreed that a student's academic and professional success is meaningful only when it is connected to humanity, kindness, patience and high moral values. That is why emotional intelligence, which includes empathy, discipline, perseverance and honesty, was declared more important than mere intelligence (IQ). The real beauty of success lies in humility, service to humanity and modesty, not in pride and boasting.

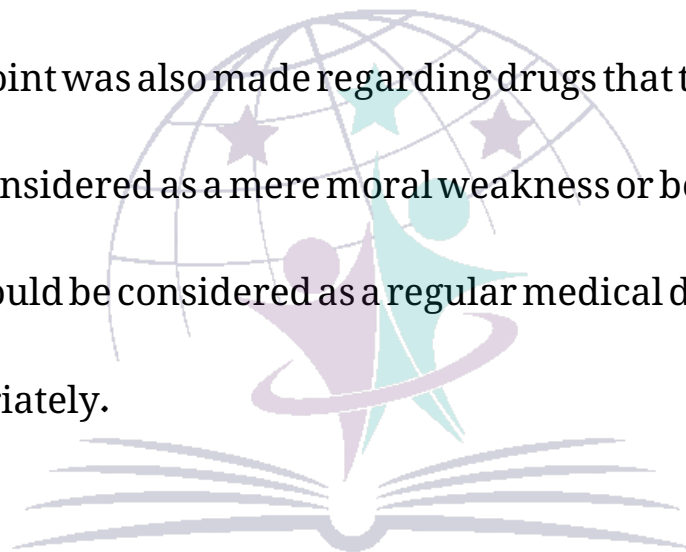
It was also clarified that along with external training, internal motivation, interest and true desire are also indispensable for success. Emotional balance, self-responsibility and discipline enable a person to face homesickness, difficulties and uncertainties, while perseverance gives the courage to move forward in every difficulty. Similarly, effective mentorship from teachers and parents instills foresight, wisdom and confidence in children.



Concern was also expressed over the growing trend of digital addiction and it was emphasized that prevention should start from home, because children first learn from the behavior of their parents and elders.

Similarly, qualities like gratitude, prudence and contemplation are also developed not only from advice but also from practical examples.

An important point was also made regarding drugs that their addiction should not be considered as a mere moral weakness or behavioral problem but should be considered as a regular medical disorder and treated appropriately.



The sessions concluded with the comprehensive message that failure is not the end of life but an opportunity to rise again with new determination, better strategy and effective guidance. There is no shortcut to success; dedication, hard work, dedication and constant

self-accountability are the foundation of progress. Similarly, studentship should be considered a full-time responsibility, the aim of which is to achieve various stages of education by acquiring knowledge continuously and step by step.

These two academic sessions are a powerful expression of the fact that if education is combined with human values, character building, emotional intelligence, active parental involvement, teacher guidance, connection with nature and a compassionate training environment, a generation can be produced that is not only academically distinguished but also serves humanity.

